[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3667

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

मुगल चित्रकला में रंग संयोजन

उषा महोबिया
सहायक प्राध्यापक '' इतिहास ''
शा. महारानी लक्ष्मी बाई स्नातकोत्तर, कन्या महाविद्यालय किला भवन इन्दौर, (म.प्र)

प्राचीन समय से ही भारतीय चित्रकला का इतिहास बहुत समृद्ध विषाल एवं विस्तृत रहा है। मुस्लिम आक्रमण से पूर्व जैन, बौद्ध एवं हिन्दुओ ने चित्रकला के क्षेंत्र में अपना योग दान दिया। अजंता चित्रकला विष्व में प्रसिद्ध है, और इन चित्रो का निर्माण गुप्त काल मे हुआ जिन पर प्राकृतिक रूप से बने रंगो का प्रयोग किया गया है।

मध्यकाल मे चित्रकला मै महात्वपूर्ण परिवर्तन आये, सल्तनत काल की चित्रकला मै ईरानी प्रभाव देखने को मिलता है। दरबारी चित्र, वीणा, सितार, वेषभूषा, आभूषण आदि के चित्रो में सजीव रंगो का प्रयोग किया गया । जिनसे चित्र सजीव, जीवंत प्रतीत होते है। और इन चित्रो में नीले, हरे, और सुनहरे रंगो का प्रयोग बेंहद खूबसूरती से किया गया है।

चित्रकला की ईरानी शैली में हिन्दू शैली को प्रभावित किया, जिसके परिणाम स्वरूप मुगल शैली का जन्म हुआ । मुगलो के समय चित्रकला के क्षेत्र मे वास्तिविक विकास आरम्भ होता है। जहॉगीर के समय तक यह कला अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच चुकी थी ।

बाबर को चित्रकला से विषेष प्रेम था, इस कला को उसने संरक्षण दिया, उसके दरबार का प्रसिद्ध चित्रकार ''**बहजाद**'' था। इस समय पेड पौधे, उद्यान बगीचे, दरबार, आखेट के चित्रो में प्राकृतिक रूप बनाये गये हरे काल, नीले सुनहरे, रंगो का प्रयोग सुन्दर ढंग से किया गया है। हुमायू ने अपने दरबार मै चित्रकारो को संरक्षण दिया । चित्रो में बारीक रेखाए, वस्त्रो पर सुनहरे रंग का प्रयोग और अन्य चमकदार रंगो का प्रयोग किया गया रंगो के मिश्रण की कला मुख्य रूप से अपनाई गई। जिससे चित्रो में अकथनीय सुन्दरता आ गई और तथा निर्जीव चित्रो में भी ऐसा प्रतीत होता है, मानो उनमें आत्मा हो जीवन हो ।

अकबर अपने समय का महान शासक हुआ, उसके दरबार में सत्रह प्रमुख चित्रकार थे। इस समय फारसी और हिन्दूषैली दोनो का अदभूत मिश्रण देखने को मिलता है, दरबार में बादषाहो की शान – शौकत का चित्रण आकर्षक और कलापूर्ण बनाने के लिए उन्हे सुनहरे रंगो से सजाया गया, शाही हरम के दृष्य मुख्यतः श्रृंगार करती स्त्रिया ए वे आखेट के चित्रो में नीले गहरे समुन्द्री और सुनहरी रंगो का विषेष रूप से प्रयोग हुआ। नीम,आम, केला और बरगद के वृक्षो के भी संजीव रंग के चित्रो की भी अधिकता है।

जहॉगीर तथा शाहजहां के समय रंगो को मिलाने की कला का पर्याप्त विकास हो चुका था। अकबर के बाद जहांगीर ने चित्रकला के स्वर्णिम युग को आगे बढाया। मानवीय आकांक्षाओ और भावनाओ के अनुरूप चित्र बनाये गये, इसके अलावा बगीचे, पषुपक्षिओ, जानवरो एवं असंख्य धार्मिक चित्रो मे भी अद्भूत रंग संयोजन मिलता है,। एक चित्र में नूरजहॉ की गुलाब सूंघते हुए दिखाया गया है। अतः मुगल शैली मे गुलाब फूल का महात्वपूर्ण स्थान है, जैसा की अजन्ता के चित्रो में कमल के फूल के चित्र का महत्व है। इसके अलावा कलाकारो द्वारा तैयार किये गये रंगो और उनके दर्षाने का ढंग अपूर्व था। रंगो के अलावा रेखाओ के अंकन की दिषा में भी महत्वपूर्ण कार्य हुए ।

शाहजहॉ के समय आंतरिक जीवन की झॉकी, शाही वैभव, धन–सम्पन्न, सामन्तो के रहन – सहन के चित्र अधिक मिलते है, जिनमे चमकदार रंगो का प्रयोग किया गया है। औरंगजैब ने इस कला की और अधिक ध्यान नही दिया परन्तु फिर भी जनता के चित्र एवं स्वयं शासक (औरंगजैब) के भी चित्र मिलते है।

मुगल शैली की चित्रकला ज्यामितिक कला कृतिया जिसमें कृत्रिम नहरे, उथले सरोवर, फौवारो की कतारे तथा खुले मण्डपो का प्रयोग उद्यानो को और अधिक सुन्दर बना देता है। इमारतो पर कुरान की आयतें लिखी गई है। महलो और और भवनो में धरातल की आकृतिया भी मिलती है।
मुगल शासको में कला के प्रति अभिरूचि होने से पर्याप्त विकास हुआ अतः यह समय कलाओ की उन्नति का स्वर्णयुग कहा जाये तो कोई अतिष्योक्ति नही होगी।

संदर्भ ग्रन्थ :– *डॉ. दिनेष चन्द्र भारद्वाज, डॉ. उमाषंकर मेंहरा*